International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 25-27

नयी कविता में मानव मूल्यों में परिवर्तनशीलता

उपासना
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौड़ ब्राह्मण महाविद्यालय, हरियाणा, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोधपत्र में नयी कविता में मानव मूल्यों में होते विघटन को दर्शाया गया है। दिन–प्रतिदिन मानव मूल्यों के कारण समाज में बढ़ने वाली समस्या को बताया गया है। मनुष्य नैतिक, सामाजिकता, धार्मिक एवं राजनीतिक मूल्यों को शाश्वत मानकर मानव–समाज उनके सहारे जीवन में शान्ति और सुख प्राप्त करने के लिए युगों युगों से प्रयत्नशील रहा है, लेकिन उनको प्रथम और द्वितीय महायुद्धों ने झूठा, खोखला, अस्थायी और अविश्वसनीय बना दिया हे। नयी कविता अपने आप में अपने समय, समाज और उसके कुरूप का यथार्थ का चित्रण करती है। नयी कविता का अपना समाजशास्त्र है। उनका अपना अस्तित्व ही उसको अन्य कविताओं से अलग करता है। नयी कविता में समकालीन जीवन की भी परछाई देखने को मिलती है। नयी कविता के कवियों ने अपने युग समाज, परिवेश और सरकारों से जोड़ते हुए अपने काव्य को अभिव्यक्ति दी है। कवि को मानव मूल्यों को प्रस्तुत करने के लिए न केवल अपनी काव्याभिव्यक्ति का त्याग करना पडता है, अपितु सडे गले प्राचीन सरोकारों का भी त्याग करना पडता है।

मूल शब्द : समाज, समकालीन, काव्याभिव्यक्ति, नई कविता, शिल्प विज्ञान।

प्रस्तावना
नयी कविता के नाम का आधार तार सप्तक की परंपरा में निकलने वाला अर्द्धवार्षिक संग्रह है जो सन् 1953 ई. में नयी कविता के नाम से प्रकाशित हुआ था। हिन्दी काव्य में प्रयोगवाद के बाद नई कविता का विकास हुआ। स्वतन्त्रता के उपरान्त लिखी गई वे कविताएँ जिनमें नया भाव–बोध नए शिल्प विधान को अपनाया गया, नई कविता के नाम से जानी गई।
1960 ई. के बाद जो कविताधारा विकसित एवम् परिवर्तित हुई वही आगे मुक्तक काव्यधारा, नई कविता धारा, नवगीत धारा आदि वर्गों में विभक्त हुई। नई कविता उदय होने के अनेक राजनीतिक कारण रहे है। जिनके कारण जनता में संत्रारा, असंतोष, संघर्षशीलता, शोषण, आंतकवाद तथा विकृत जीवन की वैभव लिप्सा इतनी बढ़ गयी कि उसने सारे जीवन मूल्यों को तिरस्कृत कर डाला।
मूल्यों को सीमा में नहीं बाँधा जा सकता है। मूल्य के स्वरूप में कहा जा सकता हे। कि समय की गति के अनुसार मूल्य भी परिवर्तित होते रहते है। जैसी समाज की परिस्थितियाँ होंगी मूल्य भी उनके अनुरूप ही परिवर्तित हो जाते है। अतः नये मूल्य पुराने मूल्यों को तोड़कर समय–समय पर अपना रूप बदलते है। नई कविता में जीवन मूल्यों में होते विघटन को उजागर किया गया है। नई कविता जीवन के हर पक्ष से जुडी हुई है। नई कविता जीवन के यथार्थ की ओर उन्मुख है और मानव जीवन की समस्त प्रवृत्तियों से परिपूर्ण है।

नयी कविता में अभिव्यक्त परिवर्तित जीवन मूल्यों के उतरदायी कारण
भारत की स्वतन्त्रता को नया संविधान लागू हुआ। इस नये संविधान में जनता के लिए अनके मौलिक अधिकारों की घोषणा की गयी। इन मौलिक अधिकारों के साथ–साथ जनता के लिए कर्तव्य भी निश्चित किए गए। अतः जनता परतन्त्रता में भोगे हुए यथार्थ को भूलकर निश्चिन्तता के साथ व सुख सुविधापर्वूक जीविका जुटाने की प्रक्रिया में जुट गयी। परन्तु शीघ्र ही लोगों की सोच में परिवर्तन आ गया। क्योंकि वह आजादी सैद्धान्तिक स्तर पर जितनी सुन्दर थी, व्यवहारिक स्तर पर उतनी ही वितृष्णाकारक सिद्ध हुई।
क्योंकि पूंजीवाद आंतकवाद पाश्चात्य संस्कृति प्रभाव ने उनकी विचारशक्ति को बदल दिया। अतः प्राचीन जीवन मूल्य परिवर्तित होकर नयी शासन व्यवस्था के प्रति नये मूल्यों में परिवर्तित हो गए। इन नए मूल्यों की अभिव्यक्ति नई कविता के कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में की है। क्योंकि साहित्यकार की समाज का दर्पण माना गया है। जैसे समाज और परिस्थिति परिवर्तित होती है। साहित्यकार उन्हीं का अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। अतः नयी कविता में परिवर्तित जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति देने वाले सदैव कवि हुए है। जैसे अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिज, धर्मवीर भारती, सर्वश्वर, दया सक्सेना, कुबेर नारायण, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रभाकर, मानव विजय, देवनारायण साही, रघुवीर सहाय, नरेश मेहता, बालकृष्ण राव, कीर्ति चौधरी आदि। नयी कविता में अभिव्यक्त परिवर्तित जीवन मूल्यों की परिवर्तनशीलता को निम्न कारणों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।

1. सामाजिक जीवन मूल्यों में परिवर्तनशीलता
वैज्ञानिकता और यांत्रिकता के अपूर्व प्रसार से व्यक्ति और समाज में पारस्पारिक सम्बन्धों में दूरी का समावेश होने लगा। भौतिकवादी लिप्सा ने व्यक्ति को स्वकेन्द्रित बना डाला। समुदाय व समाज के विकास के लिए विचार करने का अवसर उसके पास नहीं है। अतः स्वतन्त्र भारत में सामाजिक मूल्यों का स्वरूप पूर्णत बदल चुका है। प्राचीन जवीन मूल्य आदि पुराने दर्रे वाली बात मान जाने लगा। सत्यता, ईमानदारी, राष्ट्रीयता की भावना जा चुकी है। दिनकर जी ने परिवर्तित जीवन मूल्यों पर व्यंग्य करते हुए लिखा है– मूल्यों का पचडा बेकार है। सबसे बडा मूल्य वह है जिसके सहारे गाडी चलती है। (रामधारी सिंह दिनकर– शुद्ध कविता की खोज पृ. 214)

आधुनिक समय में सामाजिक व्यवस्था के दोषा पर भी दिनकर जी ने करारी चोट की है–

धंस गए वह अंतल में / गुण की जहाँ नही पहचान।
जाति गोत्र के बल से ही/ आदर पाते है जहाँ सुजान।
(दिनकर रश्मिस्थी, पृ. 4)

इसी प्रकार खान–पान सम्बन्धी परितर्वनशीलता को भी कवियों द्वारा उद्घाटित किया गया है। भारत देश दूध दही का देश कहा जाता है। जिसके वीर हृष्ट पुष्टता के कारण प्रसिद्ध रहे है, वहां भी पाश्चात्य खान पान को अपनाया जा रहा है। कवि रामशरण मित्र ये पंक्तियां इस सत्यता को उजागर करती हैं।

ला चार पैसे का चषक के / चाय का लेकर पिऐं।
क्यों स्वस्थ रोगी हो गये? / जो तप्त पानी भर पिऐं।
(परतन्त्र रामशरण मिश्र)

जहां खान पानी, रहन–सहन आदि में बदलाव आया है वहीं भारतीय नर नारी पाश्चात्यी वेश भूषा व फैशनपरस्ती की होड में भी पीछे नहीं है। स्त्रियां आधे बदन को ढंकने वाला वस्त्र पहनकर लज्जा का भी अनुभव नहीं करती। तथा इसके साथ ही श्रृंगार के अधिक से अधिक साधनों का प्रयोग करने लगी है। उपेन्द्रनाथ अश्क व रामनरेश त्रिपाठी की पंक्तियों में इस केशनपरस्ती को बखूबी देखा जा सकता है।

रंग काला है किसी का/पोतकर वह सफेदी/रात पर दिन की सवारी की।
छटा दिखला रही/ किन्तु उनके लाल होंठो से/ दहलता है कलेजा।
नोंच खाया है किसी को कुछ/लागा सा गाल पर है।

2. पारिवारिक जीवन मूल्यों में परिवर्तनशीलता

परिवार जो समाज की सबसे छोटी इकाई मानी जाती है। परिवार ही वह संस्था है जहां देश की भावी नागरिकों सुसंस्कृत किया जाता है। अतः परिवार ही समाज, देश व राष्ट्र का आधार होते है। संयुक्त परिवार प्रणाली जिसे भारत आदर्श माना जाता था। वर्तमान समय में वह भी टूटकर बिखर चुकी है। संयुक्त परिवार जिसमें सभी सदस्य मिलजुल एकजुटता के साथ जीवन निर्वा करते थे, जहां सभी के आदर्श व कर्तव्य बेटे हुए थे ताकि गुरु कलह न हो। वहीं संयुक्त परिवार प्रणाली अब एकल परिवार प्रणाली में परिवर्तित हो गयी है। आधुनिक काल की सन्तानें माता–पिता को समझती है। उन्हें वृद्धाश्रम भेज देती है तथा इनके साथ ही सारे रिश्ते नाते केवल दिखावे के लिए रह गये। मालवीय जी ने इस सच्चाई को साहित्य के माध्यम से उकेरा है।

"भीड भाड भाग–दौड़/ सूत्र वो गए/ माँ–बेटे, पति पत्नी यन्त्र हो गये।"
(आधुनिक काव्य नवीन संस्कृत चेतना)

संयुक्त परिवार प्रणाली ढूढने के साथ ही पति पत्नी के संबंधों में भी प्रेमभाव नहीं रहा। उसमें आपसी द्वेष इतना बढ चुका है। पति पत्नी की अपेक्षा प्रेमी प्रमिका के संबंधों को बढावा दिया जाता है। पति पत्नी में लडाई झगडे है। जिनका प्रभाव बच्चों पर पडता है। जिससे बच्चे बडे होकर माता पिता का सम्मान नहीं करते। कवि कुमार की ये पंक्तियां इतनी तथ्य को उजाकर करती है।

मैनें देखा है/भागते हुए तुम्हें/अपने ही बनाये घर में/
अपराधी सन्तान हमलावर हो।
(भीतर नदी की यात्रा पृ. 65)

अनमोल विवाह भी पारिवारिक तनाव के कारण बनते है। यदि युवक युवतियों की अनिच्छा से विवाह किया जाता है तो तनाव की स्थिति ज्यादा बढ जाती है। ठीक इसी प्रकार कई बार गरीब मां बाप अपनी बेटियों का विवाह बडी आयु के व्यक्ति के साथ कर देते है। जिससे लडकी जबरदस्ती की वैचारिक जिन्दगी हो ढोती है। ठीक इसी प्रकार अमीर अधेड युवक भी पैसों के बल पर विवाह की चाह व मौज मस्ती की इच्छा रखते हैं। जैसे

क्योंकि साठ के होकर भी/दूल्हा अभी बनेंगे हम।
किसी बालिका से विवाह कर/रस में कभी सनेंगे हम।
(हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना–डॉ. हरि दामोदर)

3. आर्थिक जीवन मूल्य

अर्थ अर्थात धन का जीवन में अत्यधिक महत्व है। वर्तमान समय में तो यह स्थिति बन गयी है कि यदि किसी के पास धन है तो उसके पास विद्या पद प्रतिष्ठा बल सब कुछ है। क्योंकि धन के बल पर सभी भौतिक सुख साधनों को प्राप्त किया जा सकता है। भारत की आर्थिक वैश्वीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सन्धि के प्रभावों से व्यापक रूप से प्रभावित हुई। पूंजीवाद के प्रसार व विकास के कारणों से आर्थिक मूल्य विघटित होते जा रहे है। यह अर्थ धन का ही प्रभाव है कि आत्मीतया का स्थान औपचारिकता ने ले लिया है तथा अर्थ के सामने नैतिकता, दया प्रेम त्याग सहानुभूति करूणा जैसे शाश्वत मूल्यों को पीछे धकेल दिया। अर्थ के प्रभाव के परिणामस्वरूप ही लोगों के मन में असंतोष कुण्ठा व ईर्ष्या भाव ने घर बना लिया। अर्थ का सबसे अधिक प्रभाव रोजगार पद पर पड़ा। पैसे के बल पर नौकरियां प्राप्त की जाती है। रोजगार दफ्तर का चित्रण कितना लाभदायक है। महेश उपाध्याय जी की ये पंक्तियां महंगाई पर व्यग्य करती है।

चीलें उतर रही है/शायद आंधी आयेगी।
आखिर कब तक/हाड मौस महंगाई खायेगी।
(आंधी आएगी) (आधुनिक काव्य नवीन सांस्कृतिक चेतना)

बेरोजगारी मंहगाई के इस युग में भ्रष्टाचार का तो कोई अन्त ही नहीं है। प्रत्येक विभाग व प्रत्येक कार्य के लिए घूस देना अनिवार्य सा हो गया है। शासन तन्त्र पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुका है जिनका उद्देश्य यही है कि

पूंजीपतियों को आत्म निर्भर बनाना/ तथा बाकियों को कागजी
समाजवाद की अफीम खिलाना।
(आधुनिक काव्य नवीन सांस्कृतिक चेतना पृ. 271)

4. शैक्षिक जीवन मूल्य

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा का प्रचार प्रसार तीव्रगति से हुआ। शिक्षा का उद्देश्य को शिक्षित कर रोजगार के साधन उपलब्ध कराना व अधिकारों का प्रयोग करना सिखाना था और

फिर भी गया है कि जिस देश की जनता शिक्षित होगी वही देश उन्नति करेगा। हालांकि भारत में शिक्षा प्रसार जिस तीव्रता के साथ हुए उसी के अनुरूप बहुत से क्षेत्रों जैसे विज्ञान तकनीकी अनुसंधान आदि के अपार सफलता भी प्राप्त हो गयी। लेकिन जहां एक तरफ शिक्षा से देश का विकास हुआ वही दूसरी तरफ पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से अनेक हानियां भी हुई। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव स्वरूप नारी व्यवसाय के क्षेत्र में आयी। उस पर व्यवसाय के बोझ के कारण उसका परिवार से तालमेल असन्तुलित हो गया। इसी प्रकार धर्म दर्शन आदि पर आस्था हो गयी तथा इसके साथ ही वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी अनेक दोष आ गये है।
समदरश मिश्र की अभिव्यक्ति है

झासी महाकाल में/ किससे के कवि/वीर रस की कविताएं सूखा रही है महफिल जो पास लिए हुए/शहर का सारा अन्धकार बना हुआ है झूमता है।"

5. सांस्कृतिक व नैतिक मूल्य

संसार क्रान्ति तथा उपभोक्तावादी वैचारिकता के कारण विश्व स्तर पर सांस्कृतिक मौलिक की अस्मिता का संकट उपस्थित हुआ है। ज्ञान विज्ञान के प्रचार प्रसार माध्यमों की अधिकता व पाश्चात्य संस्कार के अन्धानुकरण के कारण भारतीय संस्कृति के गौरवपूर्ण आदर्श खो चुके है। नई संस्कृति के नाम पर सूचना आधार माध्यमों द्वारा जिस सांस्कृतिक परिवेश का निर्माण किया जा रहा हे। वहां सभी मूल्यों का विघटन होता जा रहा है। संस्कृति असंस्कृति में बदलने लगी। सद्भाव सहभागिता उदारता परोपकार सेवा आस्था भक्ति और प्रेम जैसे मूल्य अब अपेक्षित होने लगे। मानव मूल्यों का स्थान अब वासना यौन चेतना व अनारथा ने ले लिया है। संस्कार बदल चुके है। भागवादी संस्कृति की जडे धीरे धीरे समाज में फैलती जा रही है। नारी के प्रति दृष्टिकोण यौन आकर्षण तक सीमित रह गया है।
अतः नयी कविता के कवियों ने अपने युग समाज परिवेश और संस्कारों से सदैव सम्पृक्त रहते हुए उन्हें अपनी काव्य रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है। क्योंकि कविता का जन्म ही कवि द्वारा वास्तविक स्थिति और व्यक्तिगत कल्पना शक्ति के जटिल द्वंद्व से होता है। कवि अपने युग के अनुरूप अपने रूपाकारों को बदलने के लिए विवश है। समकालीन वैज्ञानिता सत्यों समय और जीवन के बदले हुए यथार्थ काव्यों विषयों को व्यक्त करने के लिए कवि को न केवल अपनी काव्याभिव्यक्ति को बदलना पडता है अपितु संस्कारों को भी छोडना पडता है।
नई कविता हिन्दी काव्य के विकास का एक महत्वपूर्ण सोपान है। इसकी उपलब्धियां महत्वपूर्ण है किन्तु नई कविता के नाम पर ऊल जलूल शब्दों को एकत्र कर देना और उसे इतना दुरूह बना देना कि बात ही समझ न आते किसी प्रकार श्लाध्य नहीं है। अति बौद्धिकता छन्दहीनता अश्लीलता मुक्त यौन चित्रण को नई कविता का दोष नहीं कहा जाएगा। कुल मिलाकर नई कविता हिन्दी साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

सारांश

अंत में हम कह सकते है कि नई कविता के माध्यम से ही कवियों ने समाज में बदलते जीवन मूल्यों को प्रस्तुत किया तथा नई कविता को साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है। तथा सामाजिक पारिवारिक आर्थिक शैक्षिक धार्मिक नैतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में बदलते जीवन मूल्यों या दिन प्रतिदिन जीवन मूल्यों के गिरते स्तर को उजागर किया गया है। अगर हमें समाज परिवेश या परिवार को परिष्कृत होने से बचाना है तो रूढिवादिता को छोडकर नवीनता को अपनाना ही पडेगा।

सन्दर्भ सूची

1. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृतियाँः नगेन्द्र साहित्य।
2. आधुनिक काव्यः नवीन सांस्कृतिक चेतना डॉ. राजपाल शर्मा।
3. समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्यः डॉ. रेवती रमण।